

अनाम रिश्ता

हावड़ा स्टेशन पर वही जानी-पहचानी पीड़ा-दायक प्रतीक्षा... धौली-एक्सप्रेस को प्लेटफार्म पर लगने में अभी घंटों देरी थी। ट्रेन के इंतज़ार में समय काटना दूभर हो रहा था। पटना से अनारक्षित डिब्बे से रात भर का सफ़र जितना कष्ट-दायक नहीं था उससे कहीं ज्यादा यहाँ प्लेटफार्म पर समय बिताना। स्टेशन के खुले विशालकाय प्रतीक्षालय में चारों तरफ नज़र डाली... बैठने के लिए कहीं कोई भी कुर्सी खाली नहीं थी। वहाँ कुर्सी पर बैठे-बैठे कोई ऊँघ रहा था तो कोई निद्रा-मग्न था। मैं वहीं प्रतीक्षालय में चहल कदमी करता रहा समय तो काट रहा था पर इस कोशिश में भी था कि कोई अपनी कुर्सी छोड़े और मैं उस पर अपना अधिकार जमा लूँ। कुर्सियों की कतारों के बीच की खाली जगह पर भी चादर बिछा कर या पॉलिथीन बिछा कर थके-हारे लोग चिर-निद्रित अवस्था में सोए पड़े थे।

उस वातावरण की नीरवता को भंग करने के लिए थके-माँदे लोगों के खर्राटे कम पड़ रहे थे कि हाथ में केतली ले कर एक उर्नीदा चाय वाला 'चाय-चाय' हाँक लगा रहा था।

तीर्थयात्रियों का एक दल बारी-बारी से स्नानादि कार्य में व्यस्त था। कहीं किसी कोने में भिखारी-सरीखे लोग मैले-कुचैले कपड़ों में दुबके पड़े सुबह का इंतज़ार कर रहे थे। एक अपाहिज-सा बूढ़ा आते-जाते यात्रियों से रँगते हुए भीख मांग रहा था। एक भूखा-नंगा बच्चा किसी यात्री के फेंके हुए रात का बचा खाना को बड़े चाव से खा रहा था मानो कई दिनों से उसने कुछ खाया न हो। कहीं स्तूप-काय लगेज की आड़ में इक्के-दुक्के कुली भी लेटकर शायद उसी सुबह का इंतज़ार कर रहे थे कि कब गाड़ियों की आवाजाही शुरू हो और उनके गुज़र-बसर का ज़रिया निकल पड़े। प्लेटफार्म पर जीवन-निर्वाह करने वाले कितने ही ऐसे परिवार कहीं किसी कोने में सोए पड़े थे। ऐसे दृश्यों से मैं अक्सर विचलित हो जाता हूँ... हृदय अपराध-बोध से भर जाता है... आँखें अनजाने में डबडबा जाती हैं। कीड़े-मकोड़े जैसे जीवन व्यतीत करने वाले इन लोगों के लिए हमारे जैसे शिक्षित लोग आखिर क्या कर रहे हैं... ?

“बैजू भैया !!”

अचानक एक अनजानी जगह पर एक जानी-पहचानी आवाज में मेरे नाम के विनम्र तथा अंतरंग संबोधन से मैं चौंक गया। मैंने पीछे मुड़ कर देखा, एक विवाहिता तरुणी चेहरे पर स्मित-हँसी बिखेर कर मुझे अपलक निहार रही थी... शायद किसी खोये हुए रिश्ते की छोर को अचानक आविष्कार कर लेने की सुखानुभूति लिए अपने संबोधन के प्रत्युत्तर में मेरी सकारात्मक प्रतिक्रिया सुनने को आतुर थी वह। बिल्कुल अपरिचित सी लगने वाली वह महिला धीरे-धीरे मेरी तरफ बढ़ती चली आ रही थी। संबलपुरी साड़ी में लिपटी वह तरुणी बेहद खूबसूरत लग रही थी। उसके माँग पर लगी सिन्दूर और माथे की बिंदी किसी संभ्रांत परिवार से संबद्ध होने का संकेत दे रही थी। मैंने अपनी चारों तरफ देखा, कहीं कोई नहीं था जिसे उस महिला ने पुकारा था।

‘तो क्या यह संबोधन मेरे लिए था ?’, मेरी जिज्ञासा भरी उत्सुकता को भाँप कर उसने कौतूहल-पूर्वक दोहराया, “आप बैजू भैया हैं न ?” अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को मेरी आँखों में गड़ाए अब वह बिल्कुल मेरे सामने खड़ी थी, उत्तर की अपेक्षा में।

मैं एक कदम पीछे आ गया। एक अनजानी लड़की का इतना करीब आ जाना मुझे असहज कर रहा था। मेरी धड़कनें रुक सी गईं।

हालाँकि यह अपनत्व भरा संबोधन मेरे लिए बिल्कुल ही अनजाना नहीं था और न ही आकर्षित करती हुई वे मोटी-मोटी आँखें और वो दृष्टि-भंगिमा। फिर भी उसे पहचानने में मेरी असमर्थता के लिए अपनी स्मृति-शक्ति को दोष देने के सिवाय मेरे पास कोई चारा नहीं था।

‘भुलक्कड़’... हाँ, इसी नाम से परिचित हूँ मैं अपने दोस्तों में। दरअसल कभी-कभार ऐसा हुआ भी है और शायद स्वाभाविक भी है... बल्कि यूँ कहें कि ऐसा शायद सभी के साथ होता होगा कि कई दिनों के बाद किसी

पूर्व-परिचित से सहसा मिलने पर अचानक उनका नाम याद नहीं आता। ऐसा मेरे साथ भी हुआ है, पर ऐसा भी नहीं कि एक इतनी सुन्दर जानी-पहचानी महिला को याद ना रख सकूँ और भूल जाऊँ। मेरे लिए यह कतई अस्वाभाविक ही था।

“मुझे नहीं पहचाना, बैजु भैया... मैं हूँ एलिना !”

सचमुच मैं चौंक पड़ा। मेरे सामने खड़ी हुई तरुणी ‘एलिना’ हो सकती है इसका अंदाजा लगाना भी विश्वास-योग्य नहीं था। ‘एलिना’ शब्द सुनते ही मेरी आँखों के सामने एक फटी-पुरानी मैली-सी फ्रॉक पहने बारह-तेरह साल की एक शांत-सुशील और सुंदर लड़की का चेहरा सहसा उभर आया... उसकी डबडबाई हुई स्नेह-सिक्त बड़ी-बड़ी आँखों का ख्याल आया... उन आँखों में अपनों से प्यार पाने को तरसती हुई उसकी हसरतें ! उन आँखों को पहचानते मुझे देर नहीं लगी। वह एलिना ही थी ! पर वह कभी इस तरह ऐसी हालत में मुझे मिलेगी, मुझे विश्वास नहीं हो पा रहा था।

मैं विस्मित-सा खड़ा उसे अपलक ताके जा रहा था। मेरी आँखों में छाये विस्मय-भाव ने उसके चेहरे पर उमड़े कौतूहल को निराशा के काले बादलों से ढक दिया। सागर में उमड़ी तेज लहरें अचानक जैसे किनारे रेत में पसर कर विलीन हो गई हों। उसके मुखमंडल पर उदासी का घना आवरण पड़ गया। निराश मन से संयत होकर उसने कहा, “माफ़ कीजिएगा, आप मुझे मेरे ब्रजेश भैया जैसे लगे। शायद मुझसे ही पहचानने में कोई गलती हो गई है।”

अश्रुल निराश आँखों से वापस जाने के लिए वह मुड़ चुकी थी।

“अरे एलिना ! हाँ, मैं ही हूँ ब्रजेश... तुम्हारा बैजु भैया !” मैंने बड़े ही आवेगपूर्ण स्वर से उसे पुकारा था।

मुड़ कर उसने मुझे देखा... किसी अप्रत्याशित और बहुप्रतीक्षित सुख की प्राप्ति से उसका चेहरा खुशी से खिल उठा था। एक अनापेक्षित आवेग से आगे बढ़ कर हर्षातिरेक से उत्फुल्ल होकर वह मुझसे लिपट गई। मैंने उसके उस निर्विकार प्रेम को महसूस किया था। कुछ पल के लिए निस्तब्धता छाई रही। क्षण भर में स्थिति को भांपते हुए उसने अपने आप को अलग किया और मेरे पैर छूए। उसकी आँखों से दो बूँद आंसू उमड़ कर मेरे पैरों पर अनायास ही लुढ़क गए थे। शायद वे खुशी के आंसू थे जिसे उसने मानो बरसों से संजोये रखा था। एलिना के गालों पर आंसुओं की धार चमक रही थी। उसे देख मेरा भी गला भर आया था।

उसके पीछे खड़ा एक नवयुवक जिसकी उपस्थिति का अब तक मैंने विशेष ध्यान ही नहीं दिया था, झुक कर मुझे प्रणाम करते हुए उसने अपना परिचय दिया।

“बैजु भैया , मैं अनिमेष... अनिमेष राय। आपके बारे में एली से बहुत कुछ सुना है पर आपको देखकर ऐसा लगता है कि उसने जितना कुछ कहा है, कम ही है।”

मुझे यह समझने में तनिक भी संदेह नहीं हुआ कि अनिमेष ही एली का पति है। पहली ही मुलाकात में अनिमेष मुझे भा गया। ऐसे उदार और सुन्दर व्यक्तित्व के मालिक के सान्निध्य में निस्संदेह एली खुशहाल जीवन बीता रही है, जो उसके मुखमंडल की चमक से साफ़ झलक रहा था। एलिना को खुशहाल देखकर मैं आश्चर्यचकित हुआ। अनिमेष को मैंने गले से लगा लिया। मेरी आँखें पसीज गईं।

स्मृतियों के झरोखे से अतीत के जीवंत दृश्यों में मैं कहीं खो गया... करीब दस साल पहले... गर्मी की छुट्टियाँ थी। मैं मैट्रिक की परीक्षा दे कर कॉलेज में प्रवेश के लिए तैयारियाँ कर रहा था कि अचानक मेरी छोटी बहन मिनी के साथ खेलते हुए मेरे कमरे में मेरे सामने एक दुबली सी दस-बारह साल की बड़ी-बड़ी आँखों वाली प्यारी सी सुंदर लड़की आकर खड़ी हो गई। मैं अचंभित-सा एकटक उसे ताकता रह गया। वह भी टकटकी भरी दृष्टि से मुझे स्तब्ध निहारते हुए खड़ी की खड़ी रह गई, चुपचाप अपलक ! पल भर के लिए मानो सारा संसार ही ठहर गया हो। मेरा शरीर किसी अज्ञात स्पंदन से कम्पायमान होने लगा था। मेरे लिए यह एक अभूतपूर्व घटना थी। शायद यह किशोरावस्था का प्यार था या महज आकर्षण... जो उस वक्त मुझे पता नहीं चल पाया था। मेरी बहन ने उससे परिचय कराया था। एलिना ने सकुचाते हुए चुपचाप आँखें नीची कर ली थी।

एलिना हमारे पड़ोस के रमा काकी के भाई की बेटी थी जो सुदूर गाँव से अपने पिता के साथ आई थी। उन दिनों

रमा काकी बीमार चल रही थी। उन्हें देखने उनके भाई आये थे और साथ उनकी बेटी एलिना। दो-एक दिन ठहर कर उसके पिता गाँव लौट गए थे... एलिना को वहीं छोड़ कर... ताकि बुआ के कामकाज में कुछ हाथ बंटा सके। एलिना के पिता को मैं बस-अड़्डे तक छोड़ने गया था। जाते समय उन्होंने मुझे बताया था कि एलिना उनकी सबसे छोटी और इकलौती बेटी है और बहुत ही लाडली... और दो बेटे भी हैं। गाँव में खेती-बाड़ी के नाम पर कुछ भी नहीं है... जो थोड़ा-बहुत था एलिना की माँ की दवा-दारू में सब कुछ बिक गया... रमा दीदी के हिस्से के खेत को बटैहा लेकर जोत-बो कर तथा और लोगों के खेत-खलिहानों में दिहाड़ी-मजदूरी करने के बावजूद परिवार का भरण-पोषण नहीं हो पाता है। मुश्किल से एक वक्त का रुखा-सूखा खाना जुट पाता है। बेटी जात है... जल्दी बड़ी हो जाती है... खाने-खिलाने की हसियत नहीं है तो इसके हाथ पीले कैसे होंगे...। एलिना के बारे में चिंता जताई थी।

रमा काकी ने उन्हें पत्र लिख कर कहा था कि घर के काम के लिए उन्हें एक लड़की चाहिए। एवज में खाएगी-पहनेगी और ऊपर से उसके परिवार को कुछ पैसे भी दे देगी। दीदी का इशारा तो एलिना की ओर था, पर अपने मुँह से कैसे साफ-साफ कहती... उसकी बुआ जो ठहरी। मैं अपने कलेजे के टुकड़े को छोड़ कर जा रहा हूँ... इस आशा से कि वह अपनी बुआ के पास रहकर दो जून की रोटी तो कम-से-कम ढंग से खा लेगी... दो अक्षर पढ़ भी लेगी...। एक घने छायादार वृक्ष की छाया में सैकड़ों जंगली पौधे और बेलें गर्मी की तपती दुपहरी में भी पनप जाती हैं। भगवान की कृपा हुई तो मेरी बिटिया भी किसी लायक बन जाएगी।

पर बेटी एलिना की चिंता हमें सताएगी क्योंकि अपनी दीदी के स्वभाव को मुझसे भला और कौन जानेगा। फिर भी क्या करें हम...? उनकी बातों को टाल भी तो नहीं सकते हैं... उन्हीं के खेत की वजह से तो हम आज सांस ले रहे हैं वरना कब का मर-खप जाते... बड़ा एहसान है उनका हम पर...। इतना कहते हुए वे बच्चों की तरह सिसक कर रो पड़े थे। मैंने उन्हें ढाढ़स बंधाया था। जाते-जाते वे मुझे एलिना का ख्याल रखने को कह गए थे। हालाँकि मेरा उनके साथ वह पहला परिचय था। लेकिन मुझ में अपनी दीदी से अलग क्या पाया कि मुझे एलिना का दायित्व दे गए।

एलिना घरेलू काम-काज में सिद्धहस्त थी। काकी की बीमारी में उसने दिन-रात एक कर दिए। सेवा-शुश्रूषा में कोई कमी नहीं छोड़ी। घर का सारा काम बड़ी निपुणता से करती। एक-एक कर सबका ध्यान रखती। किसी को शिकायत का कोई मौका नहीं देती। घर के काम-काज के साथ-साथ उसने लिखना-पढ़ना भी शुरू कर दिया था। छुट्टियों में अड़ोस-पड़ोस के बच्चों के साथ वह भी मेरे पास पढ़ने बैठती। स्कूल भी जाने लगी थी। घरेलू अड़चनों और बंधनों के बावजूद थोड़े समय में वह कक्षा के अच्छे विद्यार्थियों में पहचानी जाने लगी। वह उत्साह से भर गई और खूब परिश्रम करने लग गई। मानो उसके कस्बाई सपनों के दायरे में अब महानगरीय विस्तार जड़ें जमाने लगा था। मुझे ताज्जुब होता कि इतनी कम-उम्र के बावजूद इतना सब कुछ वह कैसे कर लेती थी।

धीरे-धीरे एलिना हमारे घर की सदस्य बन चुकी थी। मेरी छोटी बहन मिनी की अच्छी सहेली बन चुकी थी और मेरी माँ की लाडली बेटी। मिनी के कपड़े उसे आ जाते थे और वह निःसंकोच पहन भी लेती थी। माँ ने उसके लिए नए कपड़े सिलवा कर दिए थे। नए कपड़े पहनकर वह बहुत खुश होती, मेरे इर्द-गिर्द घूमती ताकि उसके पहनावे पर मैं अपनी टिप्पणी दूँ। हालाँकि वह किसी भी कपड़े में खूबसूरत दिखती पर मैं जानबूझ कर जब कोई प्रतिक्रिया नहीं देता तो वह नाटकीय-अदाओं से मुझे रिझाती और पास आकर इतरा कर भाग जाती। मैं उसे पकड़ने को उसके पीछे दौड़ता तो वह रुक जाती और अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से घूरते हुए अपने आप को बड़ी लड़कियों के श्रेणी में रखते हुए मुझे खबरदार करती और कहती कि मुझे छूओगे तो माँ से शिकायत कर दूँगी कि तुमने मुझे छेड़ा है। मुझे असहज हुआ देख फक से हँस देती और ऐंठ कर भाग जाती। कई बार मन हो आया कि उसकी रिबन-बंधी लम्बी-लम्बी चोटियों को पकड़ कर झकझोर दूँ... गालों पर हौले से चुटकी भर दूँ... उसके रक्तिम कानों की लबों को प्यार से मरोड़ लूँ... लेकिन पता नहीं क्यों एलिना की ओर मेरे बढ़े हुए हाथ उसे छूने से पहले ही ठिठक जाते ! मेरी लालसा छू-मंतर हो जाती।

मेरी अनुपस्थिति में मेरे कमरे को अक्सर सलीके से सजा देती। बेतरतीब पड़ी किताब कापियों को सहेज देती। कपड़ों को तह लगा कर आलमारी में रख देती। पूछने पर शरमा कर भाग जाती । उस छोटी उम्र की लड़की में

व्यावहारिक जीवन के तजुर्बे को देख कर मुझे ताज्जुब होता। लोग कहते हैं कि तजुर्बा उम्र के साथ आता है। पर एली को देख कर ऐसा लगा जैसे तजुर्बा जिंदगी की समस्याओं से आता है।

पढ़ाते समय कहती, “बैजु भैया, आप मेरे शिक्षक हैं... तो आपको गुरुजी कहूं या भैया...!” फिर कहती “नहीं, मैं तो भैया ही कहूँगी... ‘बैजु भैया’... किसी को बुरा लगे तो ठेंगे से!” इस तरह की ढेरों बेतुकी सवाल-जवाब में मुझे यूँ ही उलझा दिया करती। दरअसल मैं एली से कुछ अधिक ही जुड़ता हुआ महसूस करने लगा था और शायद वह भी...। यह मुझे तब महसूस हुआ जब कॉलेज की पढ़ाई के लिए घर छोड़ कर हॉस्टल जाने की मेरी बारी आई... मैं बड़े ही भारी मन से घर से निकला था। मुझे छोड़ने के लिए मेरे भाई-बहन के साथ वह भी बस-अड्डे तक आई और मुझे विदा करते हुए अपने को रोक नहीं पाई थी... बिलख कर रो पड़ी थी। महज अपनों का स्नेह पाने को आतुर एक अनजानी लड़की का मेरे जीवन के इतने करीब आ जाना... ऐसा सोचते हुए मैं उदासीन हो गया था !

दशहरे की छुट्टियों में जब घर आया तो सब कुछ बदला-बदला पाया। सिर्फ तीन महीनों के अंतराल में इतना कुछ परिवर्तन हो जाएगा, मैंने सोचा भी न था। मेरे आने की खबर मिलने के बावजूद एलिना मुझसे मिलने नहीं आई थी। कारण पूछने पर किसी से भी ढंग का जवाब नहीं मिला। मिनी के आँखों में आंसू देखकर मैं विस्मित हो गया। माँ ने बताया कि एलिना के लिए हमारे दोनों परिवारों के बीच अशांति बनी हुई है। इस बीच माँ और काकी में तनातनी हो गई है। उनका आरोप है कि हमारे लाड़-प्यार से एलिना बिगड़ गई है।

रात भर मुझे नींद नहीं आई। सुबह उठकर घर में बिना बताये किसी अनजाने आकर्षण से काकी के यहाँ खिंचा चला गया। मैंने दरवाजे पर आवाज़ लगाई, “एलिना...!”

प्रत्युत्तर में, “बैजु भैया” कहती हुई वह भागी ही थी कि अचानक काकी के कठोर शब्दों ने मानो एक अविरल बहती हुई धारा-प्रवाह को रोक दिया हो। वह ठिठक कर मूर्तिवत खड़ी रह गई। काकी ने बाहर आ कर मुझे घृणित शब्दों में कहा था, “पराई बच्ची से इतना मुंह लगाना ठीक नहीं... तुम लोगों के बहकावे में आकर आजकल वह किसी का कहना भी नहीं मानती... पढ़ाई तो दूर, घर का कोई काम भी नहीं करती है...।”

मैं निर्वाक खड़ा सब कुछ सुनता रहा। काकी के व्यवहार से आहत एली आवेश से कांपती हुई वापस कमरे में दाखिल हुई और पलंग पर ढेर हो कर फूट-फूटकर रोने लगी। उसने सारा प्रकरण सुन लिया था। मुझे इसका अहसास हो गया कि एली बेवजह ही प्रताड़ित हुई है। पता नहीं काकी को किस बात का क्षोभ था। अब एली या तो घर से बाहर निकलती नहीं थी या निकलती भी तो क्लेश-कलह से बचने के लिए देखी-अनदेखी कर जाती।

मुझसे यह सब सहा नहीं गया। मेरे घर में भी सभी के चेहरे पर उदासी छा गई थी। मेरी छुट्टियां खत्म होने से पहले ही मैं हॉस्टल चला गया। मुझे रोकने में किसी की भी न चली। पर वहाँ भी दिल नहीं लगा। एली के अश्रुल चेहरे को भूला नहीं पा रहा था। मन में अपराध-बोध की भावना घर करने लगी। परिस्थिति का सामना न कर मेरे पलायनवादी होने पर मैं कुंठित था। दो-एक दिन के बाद फिर वापस गांव चला गया।

माँ से मैंने एक विद्रोही की तरह पूछा था, “क्या हम एली को अपने घर नहीं ला सकते। काकी अगर उसके व्यवहार से संतुष्ट नहीं है तो छोड़ क्यों नहीं आती उसके घर। नाहक एक पराई लड़की पर मनमानी करना कितना उचित है ?.... “काकी को इतने सस्ते में नौकरानी भी तो मिलने से रही, जिस पर बेवजह अपना रोब जमा सके...” और न जाने क्या कुछ कह गया था मैं भावुक होकर।

हम लोग आदर्शों की, सुधार की कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। दुनियाभर को भाषण देते फिरते हैं। लेकिन जब अपनी बारी आती है तो विवश हो कर वही करने लगते हैं जो दूसरे करते हैं और जिसे हम हृदय से गलत मानते हैं।

मेरा स्वर इतना प्रखर था कि काकी तक को सुनाई दे गया। बाहर आ कर काकी ने मेरे और एली के रिश्ते पर कुत्सित और कदाचार भाषा से मिथ्या दोषारोप किया, जो मुझे अच्छा नहीं लगा। अपने स्वार्थ के लिए काकी इतना गिर सकती है, यह मेरे सोच से परे था। दरअसल इस घटना से मैं एलिना के प्रति कुछ अधिक ही जुड़ता हुआ महसूस करने लगा था। शायद इस वात्सल्य-बंधन के सुदृढ़ होने के पीछे हमारी निश्चल और निष्कलुष भावना रही थी।

मैंने यह संकल्प कर लिया कि अब मैं एली के यहाँ रहने तक कभी भी गाँव वापस नहीं आऊँगा। बेवजह उसे सजा नहीं दिलाना चाहता था। गाँव से जाते समय सड़क के किनारे छुपकर मेरा इंतज़ार करती हुई मुझसे एलिना मिली... एक फटी फ़ॉक में जिसमें से उसके पीठ पर चोट के निशान साफ़ झलक रहे थे। चोट की गहराई को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता था कि कितनी निर्ममता से उसे मारा-पिटा गया है। अपनी आँसुओं को मैं रोक नहीं पाया था।

एक मुड़े हुए कागज को मेरी ओर बढ़ा दिया था उसने। अपनी आँखों से निर्गत आँसुओं को छिपाने का व्यर्थ कोशिश करते हुए उसने कहा था, “बैजू भैया, यह मेरे पिताजी की चिट्ठी है, उसमें शायद उनका पता होगा। उन्हें कहना कि जितनी जल्दी हो सके मुझे यहाँ से ले जाएं अन्यथा मैं यहाँ बच नहीं पाऊँगी।” मेरे कुछ कहने से पहले ही वह वहाँ से भाग चुकी थी।

मैंने वैसा ही किया था। उसके पिताजी आकर उसे वहाँ से ले गए थे। उसकी दुर्दशा को उन्होंने अपनी आँखों से देखा था। जाने से पहले एली छुपकर हमारे घर आई थी और मेरी छोटी बहन मिनी से मेरा एक फोटो ले गई थी। मेरी माँ ने पत्र लिखकर यह सब मुझे बताया था।

एली को लेकर हमारे दोनों परिवारों के बीच के रिश्ते में दरार गहरा गई। हमलोगों ने गाँव छोड़ दिया था। रमा काकी और उनके बच्चों के बारे में कुछ भी खबर नहीं थी। एलिना का पता वाला वह पत्र भी मुझसे कहीं गुम हो गया था। उसके बारे में भी कोई खबर नहीं थी। कार्य-व्यस्तता और पारिवारिक समस्याओं से जूझते हुए एलिना मेरे लिए महज एक तिक्त-मधुर स्मृति बन कर रह गई थी।

इतने अरसे बाद एलिना से मेरी मुलाकात होगी, ऐसा मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। उसका मुझे अपने घर ले जाने का आग्रह मैं ठुकरा नहीं पाया। उसके घर की साजो-सज्जा देखकर मैं प्रभावित हो गया। कब्बड़ पर सलीके से रखी मेरी फोटो को देख कर सचमुच अचंभित हो गया। अपनी फोटो को देखते हुए मैं कहीं खो गया था कि अचानक बगल के ड्रेसिंग टेबल के आईने में एलीना को मेरे पीछे चाय लिए खड़ा पाया, जो शायद कब से वहाँ खड़ी थी। मेरे मुड़ने पर वह अपने कांपते हुए हाथों से चाय की प्याली मुझे थमा कर साड़ी की आँचल से अपना मुँह छिपा लिया और लजाते हुए दूसरे कमरे में चली गई। हमारे उस अनाम रिश्ते को उसने अपने दिल में आज भी संजो कर रखा है।

सबसे आश्चर्य तो मुझे तब हुआ जब मैंने रमा काकी को वहाँ उसके घर पर देखा। मैंने उन्हें पहचान लिया हालाँकि अपनी उम्र से वह काफी बड़ी लग रही थी... कमर झुक गई थी और नज़रें कमज़ोर। पर वे मुझे पहचान नहीं पाईं...

एली ने ही मेरा परिचय कराया... “काकी, ये बैजू भैया हैं !”

काकी अप्रतिभ हो गई... नज़रें झुका कर मुझसे कहने लगी, “ब्रजेश बेटा, तुम्हारे काका के गुजरने के बाद मुझे मेरी हालत पर छोड़ कर मेरे दोनों बेटे शहर चले गए। मेरे खाने-पीने का ठिकाना न रहा... मैं रोग-ग्रस्त हो गई। मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। एली को खबर मिलते ही मुझे अपने पास ले आई। इस की वजह से आज मैं ज़िंदा हूँ, बेटा, वरना....।” काकी और आगे कुछ कह नहीं पाईं। उनका कंठ रुद्ध हो गया। बिलख कर बच्चों की तरह रो पड़ीं। शायद उन्हें अपनी गलती पर पश्चाताप हो रहा था।

मैंने एली की तरफ मुड़ कर देखा... उसकी वो बड़ी-बड़ी खूबसूरत आँखें इशारों से कह रही थी कि जैसे उसने काकी को माफ़ कर दिया है... और काकी की पिछली बातों को भूल जाने के लिए जैसे मुझसे अनुनय कर रही हो।

=====